श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति,
राजस्थान का उद्‌बोधन

बीकानेर तकनीकी विश्वविद्यालय, बीकानेर द्वारा आयोजित वेबिनार

तकनीकी शिक्षा में मानवीय मूल्यों का समावेश

दिनांक 09 जून, 2020 **समय दोपहर : 12.00 बजे**

स्थान : राजभवन, जयपुर

तकनीकी शिक्षा में मानवीय मूल्यों का समावेश विषय पर आयोजित इस वेबिनार में उपस्थित ए.आई.सी. टी.ई. के अध्यक्ष प्रो. अनिल सहस्त्रबुद्धे, बीकानेर तकनीकी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री एच.डी. चारण, डॉ. अलका स्वामी, प्राध्यापकगण, अभिभावकगण छात्र–छात्राओ, भाइयो और बहिनो

मानव शिक्षा, तकनीकी शिक्षा में मानवतावादी विचारों का एक अकादमिक संकलन है। मानव का जीवन चार स्तरों पर है स्वयं, परिवार, समाज और प्रकृति। जीवन जीने के इन चार स्तरों में सामंजस्य स्थापित करने के लिए शिक्षा ज्ञान प्रदान करती है और निरंतर सुख से जीने का मार्ग प्रशस्त करती है।

शिक्षा में मानव मूल्यों का उल्लेख गांधीजी ने किया था। आज के युवाओं के लिए एक सफल, सुखी और समृद्ध जीवन जीने का निष्ठा मानवीय मूल्यों की इस शिक्षा से आ सकती है।

मूल्य शिक्षा मूल रूप से यह कहती है कि सभी मनुष्यों का जीवन लक्ष्य एक ही है, वह है निरंतर सुख से जीना। इसके लिए हम सब में समान क्षमता भी है, हम सब केवल योग्यता के स्तर पर भिन्न है।

शिक्षा से योग्यता को बढ़ाया जा सकता है। आवश्यकता है कि प्रत्येक व्यक्ति की क्षमता के अनुसार एक सही कार्यक्रम बनाया जाए।

प्रारम्भिक रूप में बच्चों को सिखाना, संस्कार देना शिक्षकों, परिवार के सदस्यों और समाज की जिम्मेदारी है, किन्तु यदि विद्यार्थी कुछ सीखने से रह जाता है, तो उसे पूरा करने के लिए शिक्षा का गहनता से अध्ययन करना होगा, ताकि व्यक्ति अपनी उच्चतम योग्यता तक पहुँच सके।

आज की शिक्षा प्रणाली में हम अपने छात्रों को अपनी योग्यता को विकसित करने के बारे में नहीं सिखा पा रहे हैं, बल्कि हम उन्हें उनके पास मौजूद जानकारी के आधार पर आंकते हैं। शिक्षा आज ज्ञान के बजाय छात्रों के सूचना स्तर का मूल्यांकनकर्ता बन गयी है।

ऐसा जान पड़ता है कि पूरी शिक्षा व्यवस्था ही अधिक से अधिक धन कमाने के उद्देश्य से गढ़ी गयी है। जबकि यदि हम ठीक से देखे तो शिक्षा के दो उद्देश्य है पहलाक्या करना है अर्थात हमें किन मानवीय मूल्यों पर चलना है तथा दूसरा कैसे करना है अर्थात हमें अपने आपको कौशल दक्ष बनाना है।

आज की शिक्षा व्यवस्था कौशल विकास पर आधारित है। कौशल से विशेषज्ञता तो आती है, जैसे डॉक्टर–इंजीनियर आदि बनना। बच्चे कौशल सीख कर विशिष्ट तो बन सकते है, पर विशिष्टता अपने आप में पूर्ण नहीं है।

हमे समाज में बहुत सारे कुशल डॉक्टर–इंजीनियर तो नजर आते हैं किन्तु वे परिवार समाज प्रकृति के लिए काम करते नहीं दिखाई देते। उनके जीवन का उद्देश्य केवल धन कमाना ही लगता है।

अतः कुशल होते हुए भी इस तरह के डॉक्टर–इंजीनियर के लिए हमारी आश्वस्ति नहीं बन पाती, क्योंकि हम जानते हैं कि उनके लिए मानवता से ज्यादा पैसे का महत्व है। ऐसी विशिष्टता परिवार समाज प्रकृति के बेहतरी और पोषण के बजाय शोषण करती है।

विशिष्टता अपने आप में पूर्ण तो नहीं है बल्कि मूल्यों के अभाव में यह विनाशकारी साबित हो सकती है, इसीलिए मूल्य विहीन शिक्षा से निकले कुशलता प्राप्त बच्चे बहुत संभव है कि परिवार, समाज व प्रकृति के लिए उपयोगी न होकर विनाशक बन जाये।

शिक्षा का उद्देश्य बच्चों को समाज की बेहतरी के लिए काम करने के लिए तैयार करना है। श्रेष्ठता के साथ कुशलता शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है। बीकानेर तकनीकी विश्वविद्यालय ने लॉकडाउन के इस समय में देश में पहली बार छात्रों के लिए '"सुखी जीवन" पर एक कार्यशाला आयोजित की है।

स्वामी विवेकानंद जी ने शिक्षा को जीवन विकास का मंत्र बताया था। उनका मानना था कि सूचना प्राप्त करना, किताबों से सीखना या इच्छाओं पर बलपूर्वक रोक लगाकर यंत्रवत बना देना, शिक्षा नहीं है।

शिक्षा वह है जो मानव जीवन और चरित्र का निर्माण करती है, इच्छाशक्ति का विकास करती है तथा स्वयं में निहित दिव्यता का साक्षात् कराती है।

अनंत ऊर्जा, असीमित उत्साह और अपरिमित धैर्य का विकास ही शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। तकनीकी शिक्षा और शिक्षण में स्वामीजी के इस कहे के गहरे निहितार्थ है। व्यक्तिगत तौर पर मैं यह मानता हूं कि तकनीकी शिक्षा में तकनीक का ज्ञान और अनुसंधान का संबंध पुस्तकीय ज्ञान से नहीं है।

विद्यार्थी जो कुछ तकनीकी ज्ञान शिक्षण संस्थाओं में प्राप्त करता है, उसको अपनी सोच में किस तरह से लेता है, इस पर ध्यान देने की अधिक जरूरत है। तकनीकी ज्ञान जीवन को नयी दृष्टि से देखने की सोच देता है। यह शिक्षा विद्यार्थी के क्षितिज का विस्तार करती है। जीवन में जो कुछ ज्ञान का रहस्य है, उससे शिक्षा पर्दा उठाती है और अज्ञानता से एक तरह से मुक्त करती है।

मदन मोहन मालवीय जी कहते थे, विद्यार्थियों के लिए तीन शब्दों का संदेश पर्याप्त है शक्ति, शक्ति और शक्ति। पहली शक्ति शारीरिक, दूसरी मानसिक शक्ति और तीसरी आत्मिक शक्ति।

तकनीकी शिक्षा में इन संदेशों को घोलने की जरूरत है। यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारा प्राचीन ज्ञान विज्ञान मानवीय मूल्यों का संवाहक होते हुए भी अत्यन्त समृद्ध संपन्न रहा है। ऋषि कणाद ने भौतिकी में प्रकाश और उष्मा को एक ही तत्व के विभिन्न रूप बताया है।

आत्म केन्द्रिंत होने और प्राप्त ज्ञान का उपयोग केवल अपने ही लिए करने की बजाय वह सार्वभौमिक कल्याण के लिए अपने प्राप्त ज्ञान का उपयोग करने की ओर अग्रसर होता है।

मानवीय मूल्यों से ही तकनीकी शिक्षा वास्तविक रूप में मानव कल्याण की संवाहक हो सकती है। इसी से वसुधैव कुटुंबकम यानी संपूर्ण विश्व एक परिवार है, इस सोच को हम सही मायने में साकार कर सकते हैं। हमारी संस्कृति का मूल ध्येय भी यही है।

इस कार्यशाला के माध्यम से घर पर ही विद्यार्थियों तक मानव मूल्यों की शिक्षा दी जा सकती है। ताकि वे परिवार के साथ इस बात को सुन सके। विश्वविद्यालय द्वारा मानव मूल्यों की शिक्षा देने के लिए किया गया यह प्रयास सराहनीय है। इस कार्यशाला से मुझे जोड़ा गया, इसके लिए आप सभी को धन्यवाद।

जयहिन्द।